हलचल

बाल पत्रिका

अंक–4, जनवरी–फरवरी, 2010

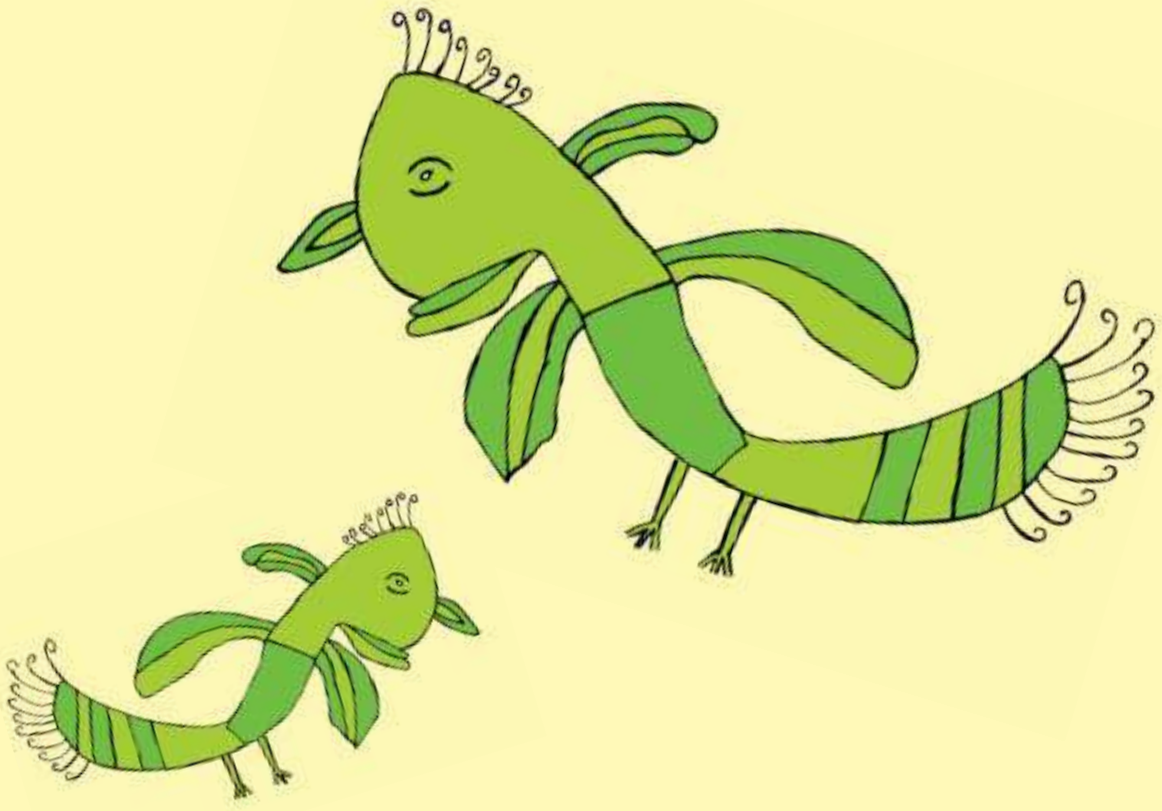

हमारे काम के बारे में.....

एक पत्थर की भी तकदीर बदल सकती है
शर्त ये है कि सलीके से संवारा जाये।

किसी शायर की लिखी हुई ये लाईनें जीवोदय जैसे समूह पर सटीक बैठती हैं। वे बच्चे जिनको समाज ने पहले ही नकार दिया हो उनको संवारना एवं उनके बेहतर जीवन के लिये प्रयास करना जीवोदय का मुख्य उद्देश्य है। जीवोदय उन बच्चों के लिये काम करता है जो विभिन्न कारणों से घर त्यागकर रेलवे प्लेटफॉर्म पर ही अपना जीवन जिया करते हैं।

संस्था की शुरुआत सन् 1999 में इटारसी के रेलवे प्लेटफॉर्म से हुई । आज ये संस्था मध्यप्रदेश के दो शहरों इटारसी एवं जबलपुर में कार्यरत् है। जब इस काम की शुरुआत हुई तो संस्था के साथियों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। उसका कारण शायद ये हो सकता है कि हमारे समाज में ऐसे बच्चों के विकास के लिये काम करने की ये एक नयी अवधारणा थी। समुदाय के लोगों को इसके प्रति संवेदनशील बनाने एवं इस तरह के बच्चों के मनोविज्ञान की समझ बनाने में संस्था के साथियों को कुछ समय लगाना पड़ा। लेकिन आज स्थिति बिलकुल अलग है। आज लोग इस काम को काफी सकारात्मक नजरिये से देखते हैं।

जीवोदय के साथी मानते हैं कि जो बच्चे बहुत अव्यवस्थित जिंदगी जी रहे हैं उन्हें भी बेहतर जिंदगी मिलनी चाहिये। यही सोचकर कुछ साथियों ने संस्था की बुनियाद रखी। आज ये बुनियाद मजबूत भवन के रुप में हम सबके सामने है।

संस्था ने मुख्यतः चार तरह के काम अपने हाथ में लिये हैं। जो इस प्रकार हैं-

डाप-इन-सेन्टर :

जीवोदय की ये एक ऐसी परियोजना है जिसमें हर दिन लगभग 35–40 बच्चे प्लेटफॉर्म से आते और जाते रहते हैं। साथ ही वे सेन्टर की व्यवस्थाओं का लाभ भी उठाते हैं। नहाना, कपड़े धोना, खेलकूद, शिक्षा, मनोरंजन और रात्रि विश्राम की व्यवस्थाएं इस परियोजना में उपलब्ध हैं । अभी तक इस परियोजना के तहत् लगभग 400 बच्चों की घर वापसी जुई है। कभी-कभी बच्चों के माता-पिता यहां आकर भी अपने बच्चों को घर लेकर जाते हैं

हलचल

बाल पत्रिका

अंक-4 जनवरी-फरवरी, 2010

इस अंक में......

चिट्ठी	2
काम चलेगा	3
मैं सोचता हूं	4
नया साल	5
चांद छिपा कुंए में	6–7
हमारे खेलकूद	8–9
सोचो और बताओ	10
हमें लगता है	11–12
संविधान की बातें	13–14–15
मां	16–17
विशेष किशोर पुलिस इकाई	18–19–20
मुद्दे की बात	21
क्या ये सच है	22–23–24

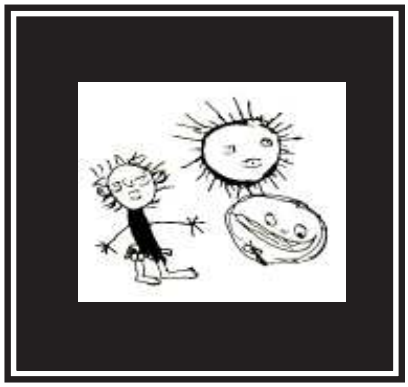

संपादन एवं डिजाइन :	ज्योति दीवान
संपादक मंडल :	सिस्टर मरीना,विकम चौरे, मेघा कुजूर
तकनीकी सहयोग / वितरण :	लिपिन पीटर
मुख्यपृष्ठ :	बिटटू कुमार महतो (14 साल) और ज्योति (10 साल)
प्रकाशक :	सिस्टर क्लारा द्वारा जीवोदय संस्था-जनता टॉकीज के पीछे इटारसी-461111(मध्यप्रदेश) मोबाइल न. - 9425040188
मुद्रक :	अनिल प्रिंटिग प्रेस, होशंगाबाद

इटारसी
जनवरी-फरवरी, 2010

प्रिय दोस्तों,

नमस्ते,

और क्या हाल है? आजकल क्या चल रहा है? अब तक तो तुम्हारे खेलकूद थोड़े कम हो गये होंगे, है न? क्योंकि परीक्षा का समय जो नजदीक आ रहा है। तो परीक्षा के लिये क्या-क्या तैयारियां कर रहे हो? कभी-कभी ऐसा भी लगता होगा कि काश ! परीक्षा न होती तो कितना अच्छा होता । लेकिन सब कुछ हमारी मर्जी से ही थोड़ी होता है।

अक्सर ऐसा होता है कि हम बच्चों के बारे में बातें होती हैं लेकिन हमें ही इन बातों में शामिल नहीं किया जाता। ऐसा क्यों है? शायद ऐसा होता हो कि सारे बड़े लोगों को यहीं लगता हो कि वे ही सब कुछ जानते है। खैर !

एक इंसान होने के नाते समाज और संविधान ने सभी को कुछ अधिकार दिये है। जानते हो, तुम बच्चों के भी कुछ अधिकार हैं जिनके बारे में संविधान में लिखा है। जैसे परिवार को एक सूत्र में बांधे रखने के लिये कुछ व्यवस्थाऐं होती हैं उसी तरह से देश को भी एक सूत्र में बांधे रखने के लिये कुछ व्यवस्थाओं की जरूरत होती है। इन व्यवस्थाओं को जिस किताब में लिखा जाता है उसे संविधान कहते हैं। हलचल के अंदर के पन्नों पर तुम्हें संविधान के बारे में और भी बातें जानने को मिलेंगी।

असके अलावा इस बार की हलचल में और भी बहुत सारी बातें हैं। उम्मीद है तुम्हें वे सब अच्छी लगेंगी।

इसी उम्मीद के साथ

आपकी दोस्त

हलचल

काम चलेगा

बछडा बोला

गाय से

दूध नही पीना है मुझको

काम चलेगा

चाय से।

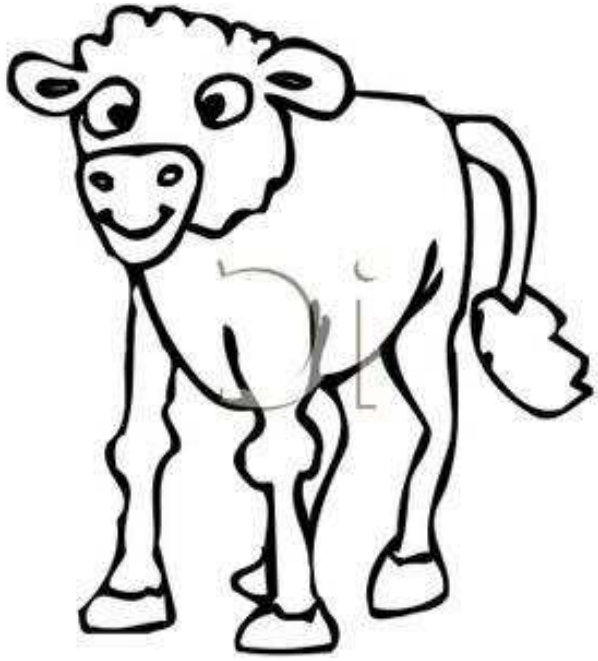

राकेश कुमार-कक्षा-आठवीं

मैं सोचता हूं

शराब का क्या करूं
मगर पीता हूं ।
छोड़ दूंगा मैं दुनिया,
क्योंकि मैं,
शराब के नशे में हो जाता हूं ।
लड़कियो को देखा
तो खो जाता हूं।
बोतल बेच के कमाता हूं
और पीकर सो जाता हूं ।
मेहनत से बोतल बेचता हूं
पैसे फालतू नशे मे उड़ाता हूं ।

कैलाश –17 साल

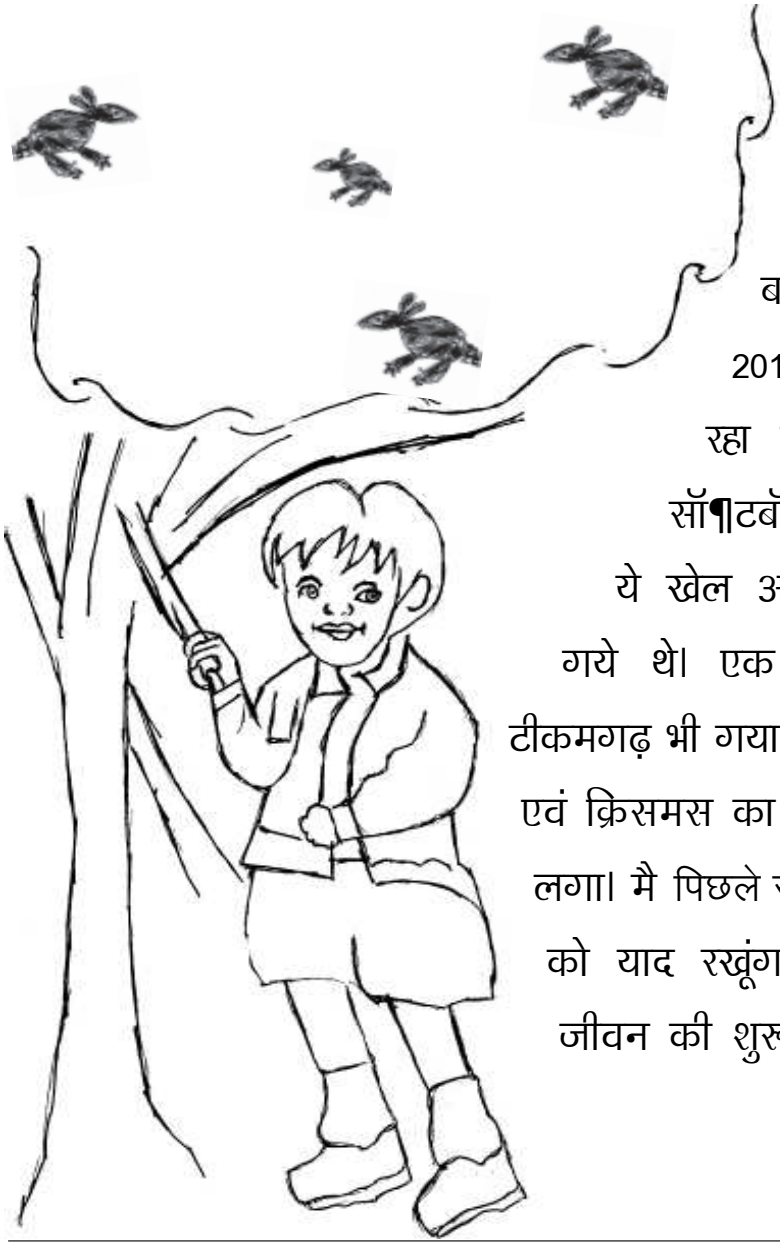

नया साल

मै अपने 2009 को बाय-बाय करता हूं। नये साल 2010 की शुरूआत करने जा रहा हूं। मै 2009 में दो बार सॉ¶टबॉल नेशनल खेलने गया था। ये खेल आंध्रप्रदेश व इन्दौर में खेले गये थे। एक बार मै स्टेट लेवल मे टीकमगढ़ भी गया था। मुझे 2009 मे दीपावली एवं क्रिसमस का त्यौहार मनाना बहुत अच्छा लगा। मै पिछले साल की हर खुशियो के पल को याद रखूंगा और 2010 मे एक नये जीवन की शुरूआत करूंगा।

राजित -कक्षा-10 वीं

चांद छिपा कुंए में

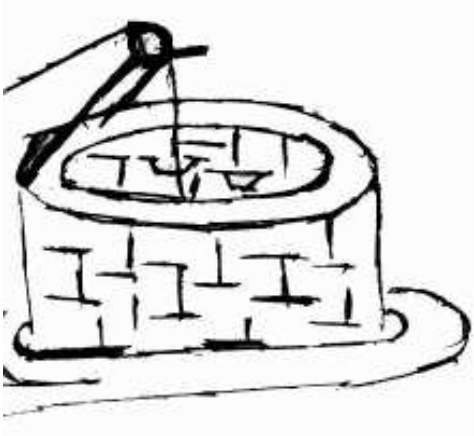

एक बार की बात है। किसी रास्ते से मोटू भैया जा रहे थे। तभी उन्हें प्यास लगी। उन्होने देखा कि वहीं पर पास में एक कुंआ है। वे पानी पीने के लिए कुंए के पास गए। रात का समय था । उन्होंने देखा कि कुंए के अन्दर चॉद गिर गया है । वे जल्दी से घर गये । वहां से रस्सी और बाल्टी लें आए।

जब उन्होंने कुंए के अन्दर बाल्टी डाली तो जोर से बाल्टी के गिरने की आवाज आयी। उन्होंने कुंए में झांककर देखा तो उन्हें बाल्टी कुंए के लोहे की गोल

सलाखों में फंसी हुई दिखी। उन्हें लगा कि चॉद बाल्टी के अन्दर आ गया है। उन्होने बाल्टी को ताकत से खींचा तो रस्सी टूट गई। वे गिर पड़े और होश खो बैठे।

जब उन्हें होश आया तो देखा कि आसमान मे चांद चमक रहा है। वे बोले कि मेरी कमर टूटी तो टूटी पर चांद तो बाहर आ गया।

राजित -कक्षा-10 वीं

हमारे खेलकूद

हमारा खेल दिवस 26 दिसम्बर को हुआ था जिसमें अंकल-आंटी, सि.क्लारा सि.मनीषा, सि.मरीना, सर और दीदी भी थे। हम सब लड़के और लड़कियां सुबह से जीवोदय के स्पार्क सेन्टर मे आने के लिए तैयार थे। इसके साथ-साथ डे-केयर सेन्टर और चिराग सेन्टर से बच्चे भी आए थे। जीवोदय स्पार्क के बच्चे सुबह मैदान में चूने से सर के साथ लाईन बना रहे थे। बच्चो ने गोल्फ का गोला भी बनाया था। खेल कूद शुरू हुए। हमने फिर धीमी-धीमी साईकल चलाई, 100 मीटर की दौड़ लगाई और तरह-तरह के खेल खेले। एक खेल ऐंसा था जिसमें लड़के और लड़कियां दोनो के पैरो मे रस्सी बांधकर उनसे दौड लगवाई। सभी बच्चों ने बहुत मस्ती की।

हम सब बच्चो ने एक साथ खाना खाया। यहां पर हमको मेले जैसा लगा। सब चीजें हमको बहुत अच्छी लगी। यहां पर कोई खेल हमको बुरा नहीं लगा। किसी बच्चे को चोट लगने पर उसके लिए दवाई की व्यवस्था भी की गई।

यहां पर एक स्कोर बोर्ड था जिसमें सभी टीमें अपना स्कोर देख सकती थी। इस दिन हर बच्चे को ईनाम भी मिला। किसी को बैग तो किसी को फुटबॉल, किसी को कैप, खेल का सैट, मिठाईयों के अलावा और भी जरूरत की चीजें मिली।

इस कार्यक्रम में लगभग 120 बच्चों ने हिस्सा लिया था। ये कार्यक्रम हमारे मन में एक अच्छी याद बनकर हमेशा रहेगा।

खेल दिवस हमारे लिए बहुत जरूरी है। इससे हमारे शरीर का व्यायाम हो जाता है और हमें पता चल जाता है कि किस चीज में हम कमज़ोर है। उसके लिये हम और मेहनत करें।

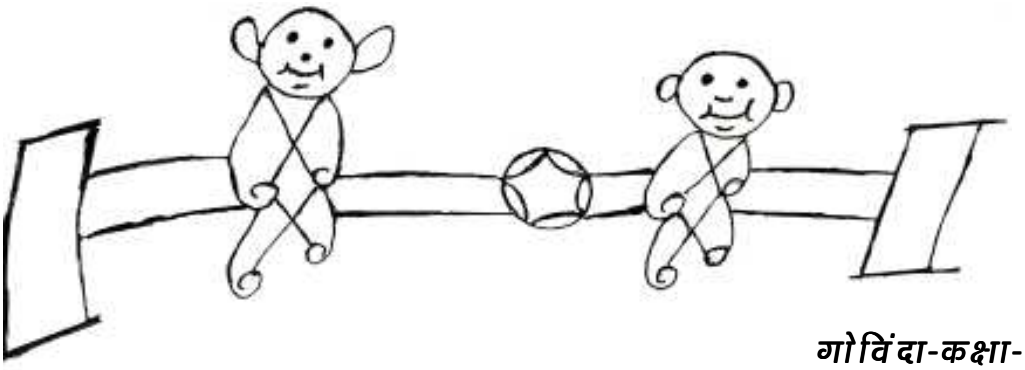

गोविंदा-कक्षा-11 वीं

सोचो और बताओ

चूड़ी की मैं खनक हूं, दर्पण की मैं चमक हूं।
गिर जाऊं तो व्यर्थ हूं, चुभ जाऊं तो दर्द हूं।

ऐसी कौन सी सिटी है, जिसमें हम प्रवेश नहीं कर सकते?

आंखें होतीं दो या चार, मेरे बिना है कोट बेकार
घुसा मेरी आंखों में धागा, दर्जी के घर से मैं भागा।

लोहा खींचूं ऐसी ताकत है, पर रबर मुझे हराता है।
खोई सुई को मैं पा लेता, मेरा खेल निराला है।

न उसमें हड्डी, न उसमें दांत
मुंह के बदले, पेट में आंत।

संकलन - नंदीलाल
कक्षा-छटवीं

हमें लगता है

एक दिन ज्योति दीवान जीवोदय संस्था के बंगलिया केन्द्र पर बच्चो से मिलने गई। वहां पर 6 वीं और 7 वीं के बच्चों से 26 जनवरी के बारे में ढेर सारी बातें की। बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि 26 जनवरी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। आगे संविधान के बारे मे भी कुछ बातें हुई। चलो देखें बच्चों ने क्या–क्या कहा।

सबसे पहले बात ये है कि संविधान हमारे भारत के व्यक्ति तथा प्रमुख नेताओं द्वारा बनाया गया था। 1947 को हमारा देश आजाद हुआ था लेकिन पूरी तरह से नहीं। 1950 में हमारा देश पूरी तरह से आजाद हुआ था। हमारे देश ने अंग्रेजों के नियम छोड़कर अपने नियम अपनाये जिसे हम संविधान कहते है।

रजनीकांत वर्मा, कक्षा–8वी

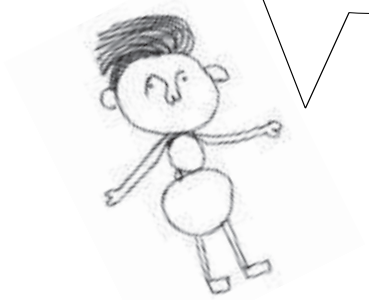

राज्यपाल द्वारा कानून चुने जाते है। सन् 1950 को यह कानून बनाये गये थे। यह संविधान सभी के लिए बनाया गया था।

अमित, कक्षा–6वीं

संविधान का अर्थ है हमारे देश में कानून बनाए जाते है और ये कानून प्रधान मंत्री द्वारा बनाए जाते हैं। हम इससे चलते है अगर कोई व्यक्ति इस नियम का विरोध करता है। तो उसे सजा दी जाती है।

भूरेलाल, कक्षा–7वी

जीवोदय संस्था इटारसी मे है। जीवोदय मे अभी आल 30 लडके
लडके बडे होकर अपने लक्ष्य को पाना चाहते जो उनको सिं.क्लारा
हम सभी बच्चे उस सुन्दर अवसर का फायदा उठकर पढ लिखकर
का नाम के साथ साथ अपना नाम भी रोशन करना चाहते है हमरा न
गया है।